

दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

समय: 45 मिनट

दिनांक: 05-01-2026

विषय सूची

वेनेजुएला पर अमेरिकी हमला

भारत की उभरती कॉन्सर्ट अर्थव्यवस्था

भारत में प्रत्येक वर्ष प्राकृतिक आपदाओं के कारण जीडीपी की 0.4% हानि होती है: रिपोर्ट

भारत की सिल्क वेल्यू चेन के 2030 तक दोगुना होने की संभावना

भारत के समुद्री भोजन निर्यात को प्रोत्साहन

संक्षिप्त समाचार

सोमनाथ स्वाभिमान पर्व

विश्व ब्रेल दिवस

दिल्ली में मानव रेबीज़ अधिसूचित रोग घोषित

कैंसर उपचार में नैनोबॉट्स

भारत बना विश्व का सबसे बड़ा चावल उत्पादक

बैटरी पैक आधार नंबर (BPAN)

वेनेजुएला पर अमेरिकी हमला

संदर्भ

- वेनेजुएला पर अमेरिकी हमलों ने अंतरराष्ट्रीय कानून के उल्लंघन, राष्ट्रीय संप्रभुता के हनन और अमेरिकी साम्राज्यवाद की धारणाओं को सुदृढ़ करने की चिंताओं को उजागर किया है।
- हालाँकि, आँकड़े दिखाते हैं कि वेनेजुएला पर अमेरिकी हमले का भारत की ऊर्जा सुरक्षा पर कोई प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ने की संभावना नहीं है।

वेनेजुएला पर अमेरिकी हमले के संभावित कारण

- तेल भंडार:** वेनेजुएला के पास विश्व के लगभग 18% तेल भंडार हैं, जो सऊदी अरब (लगभग 16%), रूस (लगभग 5-6%) या संयुक्त राज्य अमेरिका (लगभग 4%) से अधिक हैं।
- वेनेजुएला के पास अकेले ही अमेरिका और रूस के संयुक्त तेल भंडार से अधिक कच्चा तेल है।
- लैटिन अमेरिका में चीन के विस्तार का सामना:** चीन, जो विश्व का सबसे बड़ा कच्चा तेल आयातक है, वेनेजुएला का सबसे बड़ा खरीदार बनकर उभरा है।
- वेनेजुएला चीन की ऊर्जा सुरक्षा और वैश्विक प्रभाव का एक रणनीतिक केंद्र है, जिससे यह अमेरिका के लिए भू-राजनीतिक रूप से संवेदनशील बन जाता है।
- अमेरिकी समझौते:** अमेरिका ने यूरोपीय संघ, जापान, दक्षिण कोरिया और यूनाइटेड किंगडम जैसे साझेदारों के साथ व्यापार समझौते किए हैं, जिनसे उन्हें अमेरिकी पेट्रोलियम उत्पाद एवं एलएनजी खरीदने की प्रतिबद्धता मिली है, जबकि अमेरिका के पास पर्याप्त कच्चा तेल या रिफाइनिंग क्षमता नहीं है।
- मोनरो सिद्धांत का पुनरुत्थान:** अमेरिका ने इस अभियान को मोनरो सिद्धांत के अनुरूप बताया है।
- अन्य घोषित और अघोषित उद्देश्य:**
 - राज्य प्रायोजित मादक पदार्थों की तस्करी के आरोप
 - समाजवादी राजनीतिक विचारधारा का नियंत्रण
 - अमेरिका की ओर बड़े पैमाने पर प्रवासन प्रवाह को संबोधित करना

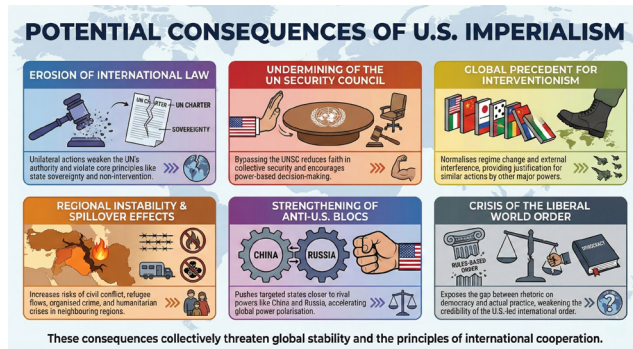
तेल आपूर्ति में वेनेजुएला की हिस्सेदारी

- वेनेजुएला पेट्रोलियम निर्यातक देशों के संगठन (OPEC) का सदस्य है, जो वैश्विक तेल बाजार पर अत्यंत सीमा तक प्रभुत्वशाली है।
- हालाँकि, अन्य तेल उत्पादक देशों की तुलना में वेनेजुएला वर्तमान में अपेक्षाकृत कम मात्रा में कच्चा तेल उत्पादन करता है।
- वेनेजुएला OPEC के कुल तेल निर्यात का लगभग 3.5% और वैश्विक तेल आपूर्ति का लगभग 1% हिस्सा है।
- यह अपेक्षाकृत कम आपूर्ति अमेरिकी प्रतिबंधों और वेनेजुएला के भारी तेल की प्रकृति के कारण है, जिसे विशेष रिफाइनरियों की आवश्यकता होती है जो अधिकांश देशों के पास नहीं हैं।
- वेनेजुएला की अधिकांश तेल आपूर्ति चीन को जाती है।

मोनरो सिद्धांत

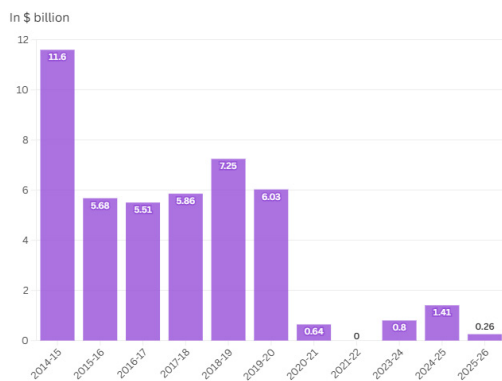
- पृष्ठभूमि:** इसे अमेरिकी राष्ट्रपति जेम्स मोनरो ने 1823 में कांग्रेस को अपने वार्षिक संबोधन के दौरान घोषित किया था।
 - यह उस समय आया जब कई लैटिन अमेरिकी देशों ने यूरोपीय औपनिवेशिक शक्तियों से स्वतंत्रता प्राप्त कर ली थी।
- मुख्य सिद्धांत:**
 - गैर-औपनिवेशीकरण:** अमेरिकी महाद्वीप भविष्य में यूरोपीय औपनिवेशीकरण के लिए खुले नहीं थे।
 - गैर-हस्तक्षेप:** यूरोपीय शक्तियों को अमेरिका के राजनीतिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।
 - प्रभाव के अलग-अलग क्षेत्र:** पश्चिमी गोलार्ध और यूरोप अलग-अलग राजनीतिक क्षेत्र बने रहने चाहिए।
 - अमेरिकी आश्वासन:** अमेरिका यूरोपीय आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेगा और अमेरिका में वर्तमान यूरोपीय उपनिवेशों का सम्मान करेगा।
- रूजवेल्ट परिशिष्ट:** 1904 में राष्ट्रपति थियोडोर रूजवेल्ट ने “रूजवेल्ट परिशिष्ट” प्रस्तुत किया, जिसने यह दावा किया कि अमेरिका को कुछ परिस्थितियों में अमेरिका महाद्वीप में हस्तक्षेप करने का अधिकार है।

- इस अतिरिक्त प्रावधान ने यूरोपीय हस्तक्षेप को रोकने के लिए लैटिन अमेरिकी देशों में अमेरिकी हस्तक्षेप का अधिकार जताया।
- इस सिद्धांत का उपयोग क्यूबा, निकारागुआ, हैती और डोमिनिकन गणराज्य में अमेरिकी हस्तक्षेप को उचित ठहराने के लिए किया गया।



भारत पर प्रभाव का विश्लेषण

- **वेनेजुएला से तेल आयात:** भारत ने चालू वित्तीय वर्ष 2025 में वेनेजुएला से \$255.3 मिलियन मूल्य का तेल आयात किया, जो इस अवधि के दौरान उसके कुल तेल आयात का लगभग 0.3% है।
- 2019 से, भारत अमेरिकी प्रतिबंधों के जवाब में वेनेजुएला के साथ अपने तेल आयात और वाणिज्यिक संबंधों को कम कर रहा है।



- **द्विपक्षीय व्यापार:** भारत का द्विपक्षीय व्यापार अब अपेक्षाकृत कम है और अभी भी कम हो रहा है।
- 2024-25 में, भारत ने वेनेजुएला से केवल \$364.5 मिलियन मूल्य के सामान आयात किए, जिनमें से कच्चा तेल \$255.3 मिलियन का था।
- यह 2023-24 के \$1.4 बिलियन आयात से 81.3% की तीव्र गिरावट थी।

- भारत का वेनेजुएला को निर्यात \$95.3 मिलियन रहा, जिसमें मुख्य रूप से \$41.4 मिलियन मूल्य के औषधीय उत्पाद शामिल थे।
- **भारत पर प्रभाव:** कम व्यापार मात्रा, वर्तमान प्रतिबंधों की बाधाएँ और बड़ी भौगोलिक दूरी को देखते हुए, वेनेजुएला में वर्तमान घटनाक्रम का भारत की अर्थव्यवस्था या ऊर्जा सुरक्षा पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ने की संभावना नहीं है।

आगे की राह

- वेनेजुएला पर अमेरिकी आक्रमण ऐसे समय में हुआ है जब भारत सक्रिय रूप से अपने कच्चे तेल के स्रोतों में विविधता ला रहा है और भारत-अमेरिका व्यापार वार्ताएँ चल रही हैं।
- यदि वेनेजुएला पर प्रतिबंधों में ढील दी जाती है, तो वेनेजुएला का कच्चा तेल भारतीय रिफाइनरियों को अतिरिक्त लचीलापन प्रदान कर सकता है और आपूर्ति केंद्रित जोखिम को कम करने में सहायता कर सकता है।
- इस उभरते वैश्विक परिदृश्य में, कच्चे माल और ऊर्जा संसाधनों के लिए युद्ध आगामी वर्षों में तीव्र होने की संभावना है।
- भारत को इसलिए सतर्क रहना चाहिए, अपनी रणनीतिक स्वायत्तता की रक्षा करनी चाहिए, ऐसे समझौतों से बचना चाहिए जो संप्रभुता या दीर्घकालिक हितों को कमजोर करते हैं, तथा भू-राजनीतिक दबाव के बिना महत्वपूर्ण कच्चे माल और ऊर्जा तक पहुँच सुनिश्चित करनी चाहिए।

स्रोत: TH

भारत की उभरती कॉन्सर्ट अर्थव्यवस्था

संदर्भ

- सूचना और प्रसारण मंत्रालय ने देश में “कॉन्सर्ट अर्थव्यवस्था” के विस्तार को सुगम बनाने, रोजगार एवं पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए एक **लाइव इवेंट्स डेवलपमेंट सेल (LEDC)** की स्थापना की है।

लाइव इवेंट्स डेवलपमेंट सेल (LEDC) क्या है?

- LEDC का गठन जुलाई 2025 में सूचना और प्रसारण मंत्री के निर्देश पर किया गया।

- यह एक **सिंगल-विंडो सुविधा तंत्र** के रूप में कार्य करता है, जो लाइव इवेंट्स उद्योग द्वारा सामना की जाने वाली नियामक, लॉजिस्टिक और समन्वय संबंधी चुनौतियों का समाधान करता है।
- इस सेल में केंद्र और राज्य सरकारों, उद्योग संघों, संगीत अधिकार संस्थाओं एवं प्रमुख लाइव इवेंट कंपनियों के प्रतिनिधियों को शामिल किया गया है।
- इसका उद्देश्य भारत भर में बड़े पैमाने पर कॉन्सर्ट, त्योहार, खेल आयोजनों और सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के लिए एक सक्षम पारिस्थितिकी तंत्र बनाना है।

भारत का लाइव इवेंट्स बाजार विकास

- संगठित लाइव इवेंट्स बाजार का मूल्य 2024 में ₹20,861 करोड़ था।
- इस क्षेत्र ने 15% की वृद्धि दर दर्ज की, जो कई पारंपरिक मीडिया खंडों से तेज है।
- थिएटर आयोजनों में उपस्थिति 45% बढ़ी, जो विविध सांस्कृतिक अनुभवों के प्रति जनता की नई भागीदारी को दर्शाती है।
- **महानगरों से परे विस्तार**
 - टियर 2 और टियर 3 शहर महत्वपूर्ण सांस्कृतिक एवं मनोरंजन केंद्र के रूप में उभर रहे हैं।
 - पूर्वोत्तर शहरों में लाइव मनोरंजन की उपस्थिति में तीव्र वृद्धि दर्ज की गई है, जिनमें शिलांग (213%), गुवाहाटी (188%) एवं कोकराझार (143%) शामिल हैं।
 - विशाखापत्तनम ने सबसे अधिक 490% वृद्धि दर्ज की, इसके बाद वडोदरा (230%) रहा।

उभरती कॉन्सर्ट अर्थव्यवस्था का महत्व

- **रोजगार सृजन:** एक बड़ा लाइव इवेंट 15,000 से अधिक प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार अवसर सृजित करता है, जिसमें कलाकार, तकनीशियन, लॉजिस्टिक्स, सुरक्षा, आतिथ्य और स्थानीय विक्रेता शामिल होते हैं।
- **पर्यटन को बढ़ावा:** लाइव इवेंट्स घरेलू पर्यटन को तीव्रता से बढ़ा रहे हैं, जहाँ दर्शक कॉन्सर्ट, थिएटर और खेल आयोजनों में भाग लेने के लिए शहरों के बीच यात्रा करते हैं।

- **शहर ब्रांडिंग और शहरी अर्थव्यवस्था:** बड़े कॉन्सर्ट शहरों को सांस्कृतिक और मनोरंजन गंतव्य के रूप में ब्रांड करने में सहायता करते हैं, जिससे अनुभव-आधारित अर्थव्यवस्था को समर्थन मिलता है तथा भारतीय शहरों की सांस्कृतिक पहचान एवं वैश्विक दृश्यता बढ़ती है।
- **सांस्कृतिक कूटनीति:** अंतरराष्ट्रीय कॉन्सर्ट और त्योहार भारत की सांस्कृतिक सॉफ्ट पावर को बढ़ाते हैं, जिससे देश को एक जीवंत, युवा-उन्मुख और सांस्कृतिक रूप से विविध वैश्विक गंतव्य के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

चुनौतियाँ

- **बुनियादी ढाँचे की कमी:** कई शहरों में विश्वस्तरीय कॉन्सर्ट स्थल, पर्याप्त ध्वनिकी, भीड़ क्षमता योजना, पार्किंग सुविधाएँ और अंतिम-मील कनेक्टिविटी की कमी है, जिससे आयोजनों का पैमाना एवं आवृत्ति सीमित होती है।
- **सुरक्षा चिंताएँ:** भीड़ सुरक्षा, आपातकालीन प्रतिक्रिया, अग्नि सुरक्षा और चिकित्सा तैयारी सुनिश्चित करना चुनौती बना हुआ है, विशेषकर बड़े आयोजनों में जहाँ अत्यधिक भीड़ होती है।
- **पर्यावरणीय स्थिरता:** बड़े पैमाने पर लाइव इवेंट्स उच्च अपशिष्ट, ऊर्जा उपयोग और कार्बन उत्सर्जन उत्पन्न करते हैं, जबकि मानकीकृत हरित प्रथाओं को सीमित रूप से अपनाया गया है।

आगे की राह

- **इवेंट मैनेजमेंट प्रोटोकॉल:** भीड़ प्रबंधन, आपातकालीन प्रतिक्रिया, बीमा कवरेज और सुरक्षा ऑडिट के लिए राष्ट्रीय स्तर पर मानकीकृत दिशानिर्देश लागू करना, ताकि जनता का विश्वास बढ़े।
- **कौशल विकास:** इवेंट मैनेजमेंट, साउंड और लाइट इंजीनियरिंग तथा लाइव प्रोडक्शन कौशल को स्किल इंडिया और NSDC कार्यक्रमों में शामिल करना, ताकि एक पेशेवर कार्यबल तैयार हो सके।
- **संतुलित शहरी योजना:** शहरों के अंदर निर्दिष्ट इवेंट जोन की पहचान करना, जहाँ उचित शोर, यातायात और सुरक्षा योजना हो, ताकि सामाजिक टकराव को न्यूनतम किया जा सके।

स्रोत: TH

भारत में प्रत्येक वर्ष प्राकृतिक आपदाओं के कारण जीडीपी की 0.4% हानि होती है: रिपोर्ट

संदर्भ

- दक्षिण-पूर्व एशिया, चीन और भारत की आर्थिक दृष्टि: आपदा जोखिम वित्तपोषण को सुदृढ़ करना रिपोर्ट 2025 हाल ही में जारी की गई है।

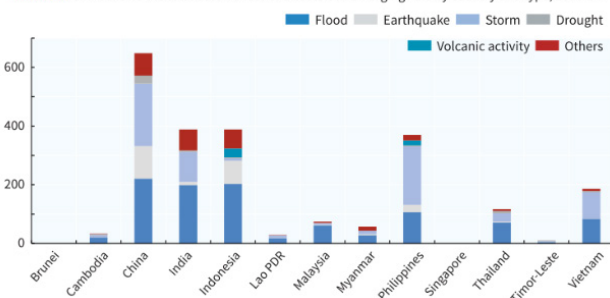
परिचय

- यह एशिया की क्षेत्रीय आर्थिक वृद्धि और विकास प्रक्रियाओं पर एक नियमित प्रकाशन है।
- जारीकर्ता संस्था: आर्थिक सहयोग और विकास संगठन (OECD)
- यह प्रकाशन दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के संगठन (ASEAN) सदस्य देशों की आर्थिक स्थितियों पर केंद्रित है।
- इस संस्करण में उभरते एशिया में आपदा जोखिम वित्तपोषण को सुदृढ़ करने पर एक विषयगत अध्याय शामिल है।

प्रमुख निष्कर्ष

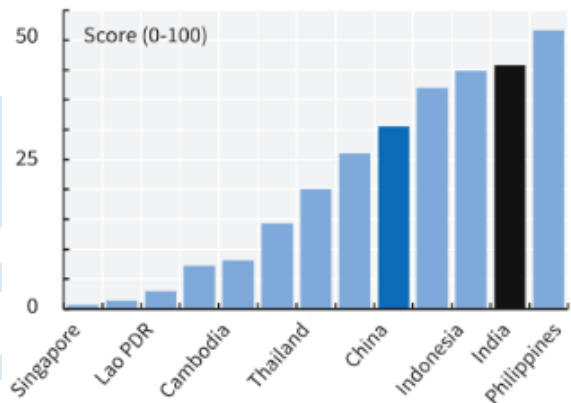
- बढ़ती आपदाएँ:** उभरती एशियाई अर्थव्यवस्थाएँ, जिनमें भारत, चीन और ASEAN-11 शामिल हैं, प्राकृतिक आपदाओं से बढ़ते खतरे का सामना कर रही हैं, जो आवृत्ति एवं तीव्रता दोनों में बढ़ रही हैं।
 - विगत दशक में इस क्षेत्र में औसतन 100 आपदाएँ प्रति वर्ष हुईं, जिनसे लगभग 8 करोड़ लोग प्रभावित हुए।
- इन खतरों की प्रकृति भौगोलिक रूप से भिन्न है:** भारत में बाढ़ और तूफान मुख्य जोखिम चालक हैं, जबकि फिलीपींस एवं वियतनाम में उष्णकटिबंधीय चक्रवात प्रायः आते हैं।
 - वहीं, चीन और इंडोनेशिया में भूकंपीय जोखिम काफी अधिक हैं।

CHART 2: Chart shows the total occurrences of disasters in Emerging Asia by country and type, 2000-24



- जीडीपी की हानि:** 1990 से 2024 तक, भारत ने औसतन प्रति वर्ष आपदा-संबंधी हानि का सामना किया, जो जीडीपी का लगभग 0.4% के बराबर है।
 - भारत की संवेदनशीलता मुख्यतः जलविज्ञान संबंधी है (गैर-तूफानी बाढ़ और भूस्खलन)।
- विश्व जोखिम सूचकांक:** एशियाई अर्थव्यवस्थाओं में, भारत विश्व जोखिम सूचकांक में फिलीपींस के बाद दूसरे स्थान पर है।
 - यह सूचकांक जोखिम की गणना करता है, जो एक्सपोजर (जनसंख्या भार) और संवेदनशीलता (संरचनात्मक संवेदनशीलता, सामना करने की क्षमता और दीर्घकालिक अनुकूलन का संयोजन) का ज्यामितीय औसत है।

CHART 5: World Risk Index, by country, 2025. The higher the score, the higher the risk



- आपदा जोखिम वित्तपोषण को सुदृढ़ करने के लिए नीतिगत प्राथमिकताएँ:
 - नियामक ढाँचे और संस्थागत क्षमता में सुधार करना।
 - आपदा जोखिम वित्तपोषण (DRF) नीति विकल्पों को सुगम और व्यापक बनाना।
 - आपदा जोखिम वित्तपोषण शिक्षा को बढ़ावा देना।
 - क्षेत्रीय सहयोग को सुदृढ़ करना।

आपदा-प्रतिरोधी अवसंरचना

- आपदा-प्रतिरोधी अवसंरचना (DRI) का अर्थ है ऐसे अवसंरचना तंत्र का डिज़ाइन और निर्माण, जो आपदाओं का सामना कर सके, अनुकूलित हो सके तथा उनसे शीघ्रता से उबर सके।
- यह लचीलापन सुनिश्चित करता है कि आपदाओं के दौरान भी आवश्यक सेवाएँ बाधित न हों।

- जैसे-जैसे शहरीकरण एवं राष्ट्रीय विकास तीव्रता से बढ़ते हैं, विद्युत, जल और परिवहन जैसी अवसंरचना महत्वपूर्ण हो जाती है।

आपदा-प्रतिरोधी अवसंरचना पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन

- CDRI राष्ट्रीय सरकारों, संयुक्त राष्ट्र एजेंसियों और कार्यक्रमों, बहुपक्षीय विकास बैंकों एवं वित्तपोषण तंत्रों, निजी क्षेत्र, शैक्षणिक तथा ज्ञान संस्थानों की एक वैश्विक साझेदारी है।
- CDRI को भारत ने 2019 में न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र जलवायु कार्रवाई शिखर सम्मेलन के दौरान लॉन्च किया था।
- सदस्य:** 50 से अधिक सदस्य।
- सचिवालय:** नई दिल्ली।

निष्कर्ष

- आपदा-प्रतिरोधी अवसंरचना का निर्माण एक जटिल कार्य है, जिसके लिए रणनीतिक योजना, नवाचार, वित्त और सबसे महत्वपूर्ण, सामूहिक दृष्टिकोण का मिश्रण आवश्यक है।
- राष्ट्रों को इन घटकों को प्राथमिकता देनी चाहिए, ताकि वे न केवल भविष्य की आपदाओं के लिए तैयार हों, बल्कि सतत विकास के लिए भी सक्षम हों।

स्रोत: TH

भारत की सिल्क वैल्यू चेन के 2030 तक दोगुना होने की संभावना

पाठ्यक्रम: GS3/कृषि; अर्थव्यवस्था

संदर्भ

- हाल ही में **केंद्रीय रेशम बोर्ड** ने भारत की रेशम मूल्य श्रृंखला को दोगुना करने की महत्वाकांक्षी योजना की घोषणा की है। वर्तमान में इसका मूल्य ₹55,000 करोड़ है, जिसे 2030 तक ₹1.1 लाख करोड़ तक पहुँचाने का लक्ष्य रखा गया है।

केंद्रीय रेशम बोर्ड (CSB)

- यह वस्त्र मंत्रालय के अधीन एक वैधानिक निकाय है, जिसकी स्थापना **केंद्रीय रेशम बोर्ड अधिनियम, 1948** (बाद में संशोधित अधिनियम 2006) के अंतर्गत की गई थी।

- यह रेशम पालन और रेशम उद्योग के विकास के लिए नीतियाँ बनाने तथा कार्यक्रम लागू करने के लिए उत्तरदायी है।
- यह रेशम पालन में वैज्ञानिक, तकनीकी और आर्थिक अनुसंधान करता है तथा गुणवत्तापूर्ण रेशम कीट बीज और कोकून के उत्पादन एवं आपूर्ति की देखरेख करता है।
- मुख्यालय:** बेंगलुरु, कर्नाटक।

रेशम और रेशम पालन के बारे में

- रेशम पालन :** रेशम उत्पादन की कला और विज्ञान है, जिसमें रेशम कीटों का पालन किया जाता है। यह कृषि, वानिकी और कुटीर उद्योग के तत्वों को जोड़कर लाखों ग्रामीण परिवारों को आजीविका प्रदान करता है।
- ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत:**
 - भारत का रेशम से संबंध 5,000 वर्ष से भी अधिक प्राचीन है, जिसका उल्लेख अथर्ववेद और महाभारत जैसे प्राचीन ग्रंथों में मिलता है।
 - ऐतिहासिक सिल्क रूट पर भारत की रणनीतिक स्थिति ने इसे रेशम व्यापार, शिल्पकला और सांस्कृतिक आदान-प्रदान का केंद्र बनाया।
 - भारतीय रेशम जैसे कांचीपुरम, बनारसी, पटोला, मूगा और एरी सौंदर्य परिष्कार एवं पारंपरिक विरासत का प्रतीक हैं।
- भारत में उत्पादित रेशम के प्रकार:**
 - मलबरी सिल्क (Mulberry Silk):** भारत के कुल उत्पादन का 70%।
 - तसर (Tussar) सिल्क:** जंगली रेशम कीटों से प्राप्त।
 - एरी सिल्क (Eri Silk):** जिसे 'अहिंसा सिल्क' भी कहा जाता है।
 - मूगा सिल्क (Muga Silk):** एक भौगोलिक संकेत (GI) उत्पाद।
- नीति आयोग की ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना के अनुसार:**
 - कम प्रारंभिक निवेश और छोटे उत्पादन चक्र।
 - उच्च रोजगार क्षमता (कच्चे रेशम के प्रति किलो पर 11 मानव-दिवस)।

- ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण और स्वरोजगार में महत्वपूर्ण योगदान।

प्रमुख रेशम उत्पादक क्षेत्र

- दक्षिण भारत (मलबारी):** कर्नाटक, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश; केवल कर्नाटक ही भारत के कुल रेशम का ~35% योगदान करता है।
- पूर्वी भारत (तसर):** झारखंड, छत्तीसगढ़, ओडिशा, पश्चिम बंगाल; आदिवासी आधारित उत्पादन; व्यापक वन-आधारित पालन।
- उत्तर-पूर्व भारत (मूगा, एरी):** असम, मेघालय, मणिपुर; पारंपरिक रेशम पालन; दुर्लभ मूगा रेशम कीट का घर।
- उत्तर भारत (मलबारी):** जम्मू और कश्मीर; कालीन और वस्त्रों के लिए उत्तम मलबारी रेशम का उत्पादन।

वर्तमान उत्पादन और रोजगार का महत्व

- भारत वर्तमान में 41,121 मीट्रिक टन कच्चा रेशम उत्पादन करता है, जिसमें 70% से अधिक मलबारी रेशम है और शेष एरी, तसर एवं मूगा रेशम है।
- 2030 तक उत्पादन का अनुमान 54,000 मीट्रिक टन है।
- भारत आज वैश्विक स्तर पर दूसरा सबसे बड़ा रेशम उत्पादक है, जो विश्व के कुल रेशम उत्पादन का लगभग 25% है, चीन के बाद।
- 60 लाख से अधिक लोग, मुख्यतः छोटे किसान, महिलाएँ और आदिवासी समुदाय, रेशम क्षेत्र से जुड़े हुए हैं।
 - यह वर्षभर रोजगार प्रदान करता है, विशेषकर वर्षा-आधारित और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में।

रेशम पालन क्षेत्र की चुनौतियाँ

- जलवायु संवेदनशीलता:** रेशम कीट पालन मौसम पर निर्भर है; सूखा और तापमान में उतार-चढ़ाव कोकून उत्पादन को प्रभावित करते हैं।
- बाजार अस्थिरता:** मूल्य अस्थिरता छोटे पालकों को प्रभावित करती है।
- तकनीकी अंतराल:** बेहतर रेशम कीट बीज गुणवत्ता, मशीनीकरण और रीलिंग दक्षता की आवश्यकता।
- कृत्रिम रेशों से प्रतिस्पर्धा:** उपभोक्ता की प्राथमिकताएँ सस्ते विकल्पों की ओर शिफ्ट हो रही हैं।

सरकारी पहल और नीतिगत ढाँचा

- सिल्क समग्र 2 योजना (2021-2026):** ₹2,161 करोड़ की पहल, जो बीज उत्पादन, बुनाई तकनीक और निर्यात को बढ़ावा देती है।
- उत्तर-पूर्व क्षेत्र वस्त्र प्रोत्साहन योजना (NERTPS):** मूगा और एरी रेशम क्लस्टरों को सुदृढ़ करती है।
- रेशम पालन क्लस्टर विकास कार्यक्रम (SCDP):** कर्नाटक, झारखंड और असम में अवसंरचना को सुदृढ़ करता है।
- सिल्क समग्र:** खेत से कपड़े तक पूरी रेशम मूल्य श्रृंखला को सुदृढ़ करने की व्यापक योजना।
- समर्थ (SAMARTH):** कौशल विकास पहल, जो युवाओं और महिलाओं को रेशम पालन और रेशम प्रसंस्करण में प्रशिक्षित करती है।

स्रोत: TH

भारत के समुद्री भोजन निर्यात को प्रोत्साहन

पाठ्यक्रम: GS3/अर्थव्यवस्था

समाचार में

- भारत के समुद्री उत्पादों के निर्यात में वित्तीय वर्ष 2025-26 के पहले सात महीनों (अप्रैल-अक्टूबर) के दौरान मूल्य के आधार पर 16% और मात्रा के आधार पर 12% की वृद्धि हुई है, जो विगत वित्तीय वर्ष की समान अवधि की तुलना में है।

वैश्विक समुद्री खाद्य व्यापार में भारत की स्थिति

- आँकड़ों के अनुसार, भारत का समुद्री खाद्य निर्यात अप्रैल-अक्टूबर 2025 में \$4.87 बिलियन तक पहुँच गया, जो 2024 की समान अवधि में \$4.19 बिलियन था।
- यह वृद्धि सफल बाजार विविधीकरण से प्रेरित थी, जिसमें वियतनाम, बेल्जियम, मलेशिया, जर्मनी और चीन जैसे देशों को निर्यात में तीव्र वृद्धि हुई।
 - हालाँकि अमेरिका को निर्यात मूल्य में 4% और मात्रा में 11% घटा, फिर भी यह भारत का शीर्ष गंतव्य बना हुआ है।
- भारत वैश्विक स्तर पर मछली और मत्स्य पालन का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है तथा दुनिया के प्रमुख झींगा (shrimp) उत्पादकों में से एक है।

निर्यात वृद्धि के पीछे प्रमुख कारण

- **वैश्विक मांग में वृद्धि:** विश्व स्तर पर प्रोटीन-समृद्ध और कम वसा वाले आहार की बढ़ती प्राथमिकता।
 - अमेरिका, यूरोपीय संघ, जापान, चीन और दक्षिण-पूर्व एशिया जैसे बाजारों से सुदृढ़ मांग। झींगा भारत के समुद्री खाद्य निर्यात का सबसे बड़ा योगदानकर्ता बना हुआ है।
- **निर्यात बाजारों का विविधीकरण:** एकल बाजार पर अत्यधिक निर्भरता में कमी।
 - पश्चिम एशिया, अफ्रीका, लैटिन अमेरिका और पूर्वी एशिया में विस्तार।
- **सरकारी नीतिगत समर्थन:** प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (PMMSY) का कार्यान्वयन—बंदरगाह, कोल्ड चेन, प्रसंस्करण इकाइयों का विकास, सतत मत्स्य पालन को बढ़ावा।
- **गुणवत्ता और ट्रेसबिलिटी में सुधार:** अंतरराष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा और गुणवत्ता मानकों को अपनाना।
 - आयातक देशों के नियमों को पूरा करने के लिए बेहतर ट्रेसबिलिटी प्रणाली।
 - स्वच्छता और पादप-स्वच्छता (SPS) मानदंडों का अनुपालन।
- **मत्स्य पालन में वृद्धि:** विशेषकर तटीय राज्यों में झींगा पालन का विस्तार।
 - पकड़ आधारित मत्स्य पालन से संस्कृति आधारित मत्स्य पालन की ओर बदलाव, जिससे समुद्री संसाधनों पर दबाव कम हुआ।

महत्व

- समुद्री खाद्य निर्यात विदेशी मुद्रा अर्जन का एक प्रमुख स्रोत है, जो भारत के व्यापार संतुलन को समर्थन देता है।
- यह क्षेत्र लाखों मछुआरों और तटीय समुदायों को आजीविका प्रदान करता है, रोजगार में कृषि के बाद दूसरा सबसे बड़ा क्षेत्र है।
- मत्स्य पालन पोषण सुरक्षा में योगदान देता है, करोड़ों लोगों को सस्ता प्रोटीन उपलब्ध कराता है।
- यह उद्योग भारत की **ब्लू इकोनॉमी** दृष्टि का केंद्रीय हिस्सा है, जो स्थिरता को विकास से जोड़ता है।

चुनौतियाँ

- बहुत कम समुद्री खाद्य प्रसंस्करण और मूल्य संवर्धन से गुजरता है, जिससे लाभप्रदता सीमित होती है।
- अमेरिका में उच्च शुल्क और यूरोप में कठोर गुणवत्ता मानक बाधाएँ उत्पन्न करते हैं।
- अत्यधिक मछली पकड़ना, आवासीय क्षरण और जलवायु परिवर्तन समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र को खतरे में डालते हैं।
- कोल्ड चेन, लॉजिस्टिक्स और आधुनिक प्रसंस्करण सुविधाएँ अपर्याप्त हैं।
- खंडित नीतियाँ और एकरूप मानकों की कमी दक्षता को बाधित करती है।

निष्कर्ष और आगे की राह

- भारत का समुद्री खाद्य उद्योग तीव्रता से बढ़ा है और वैश्विक पहचान प्राप्त की है, लेकिन इसका भविष्य सततता, नवाचार, मूल्य संवर्धन, बेहतर अवसंरचना, बाजार विविधीकरण और पर्यावरण-अनुकूल प्रथाओं पर निर्भर करता है, ताकि एक लचीली एवं जिम्मेदार समुद्री खाद्य अर्थव्यवस्था का निर्माण किया जा सके।

स्रोत : IE

संक्षिप्त समाचार

सोमनाथ स्वाभिमान पर्व

संदर्भ

- प्रधानमंत्री मोदी ने 1026 ईस्वी में सोमनाथ मंदिर पर हुए पहले आक्रमण के 1,000 वर्ष पूरे होने पर इसे भारत की सभ्यतागत दृढ़ता और अटूट आत्मा का शाश्वत प्रतीक बताया।

सोमनाथ मंदिर के बारे में

- सोमनाथ को द्वादश ज्योतिर्लिंग स्तोत्र में वर्णित भगवान शिव के बारह ज्योतिर्लिंगों में प्रथम माना जाता है।
- मंदिर गुजरात के पश्चिमी तट पर प्रभास पाटन में स्थित है, जो ऐतिहासिक रूप से समुद्री व्यापार, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और समृद्धि से जुड़ा रहा है।

- जनवरी 1026 में महमूद गजनवी ने इस मंदिर पर पहला आक्रमण किया, जिससे भारतीय सभ्यता के प्रतीकों को नष्ट करने के उद्देश्य से आक्रमणों की श्रृंखला शुरू हुई।
 - बार-बार विध्वंस के बावजूद मंदिर का कई बार पुनर्निर्माण किया गया।

मंदिर का पुनर्निर्माण

- 18वीं शताब्दी में अहिल्याबाई होल्कर ने मंदिर के पुनर्निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे सांस्कृतिक पुनर्जागरण में स्वदेशी शासकों की भूमिका स्पष्ट होती है।
- स्वतंत्रता के बाद सरदार वल्लभभाई पटेल ने सोमनाथ के पुनर्निर्माण की परिकल्पना की।
- वर्तमान संरचना का निर्माण पूरा हुआ और 11 मई 1951 को डॉ. राजेंद्र प्रसाद द्वारा उद्घाटन किया गया, जो सांस्कृतिक स्वतंत्रता के संवैधानिक आदर्शों को दर्शाता है।
 - के.एम. मुंशी मंदिर के पुनर्निर्माण में प्रमुख रूप से सहायक रहे।
- स्वामी विवेकानंद ने सोमनाथ को भारत की राष्ट्रीय आत्मा का प्रतीक माना, जो विपरीत परिस्थितियों के बावजूद पुनर्जीवित होती है।

स्रोत: दूरदर्शन समाचार

विश्व ब्रेल दिवस

संदर्भ

- विश्व ब्रेल दिवस प्रतिवर्ष 4 जनवरी को मनाया जाता है, जो लुई ब्रेल की जयंती है।

परिचय

- यह दिवस 2019 से मनाया जा रहा है, जिसका उद्देश्य ब्रेल की महत्ता के प्रति जागरूकता बढ़ाना है, ताकि दृष्टिहीन और आंशिक दृष्टिबाधित लोगों के मानवाधिकारों की पूर्ण प्राप्ति सुनिश्चित हो सके।
- ब्रेल अभिव्यक्ति और विचार की स्वतंत्रता तथा सामाजिक समावेशन के संदर्भ में आवश्यक है, जैसा कि विकलांग व्यक्तियों के अधिकारों पर कन्वेंशन के अनुच्छेद 2 में परिलक्षित है।
- 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में 50,32,463 दृष्टिबाधित व्यक्ति हैं।

दृष्टिबाधित व्यक्तियों के सशक्तिकरण हेतु पहलें

- ब्रेल विकास इकाई:** यह विशेष शिक्षा और अनुसंधान विभाग का एक महत्वपूर्ण घटक है। इसने विभिन्न भारतीय भाषाओं में ब्रेल कोड विकसित करने में योगदान दिया।
 - वर्तमान प्रकाशनों के अतिरिक्त, संस्थान 'भारती ब्रेल मैनुअल' विकसित करने की प्रक्रिया में है।
- ब्रेल उत्पादन:** भारत ने एक मजबूत ब्रेल मुद्रण तंत्र विकसित किया है—1951 में स्थापित केंद्रीय ब्रेल प्रेस, 2008 में चेन्नई में स्थापित क्षेत्रीय ब्रेल प्रेस और सरकार द्वारा स्थापित अन्य 25 ब्रेल प्रेस।
 - इन ब्रेल प्रेसों के संयुक्त प्रयासों से 14 भाषाओं में ब्रेल साहित्य प्रकाशित किया जाता है।

स्रोत: प्रेस सूचना ब्यूरो (PIB)

दिल्ली में मानव रेबीज़ अधिसूचित रोग घोषित

संदर्भ

- दिल्ली सरकार राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में मानव रेबीज़ को महामारी रोग अधिनियम के अंतर्गत अधिसूचित रोग घोषित करने जा रही है।

अधिसूचित रोग क्या है?

- अधिसूचित रोग वह होता है जिसे निदान या संदेह होने पर कानूनी रूप से सार्वजनिक स्वास्थ्य अधिकारियों को रिपोर्ट करना अनिवार्य होता है।
- अनिवार्य रिपोर्टिंग वास्तविक समय निगरानी, शीघ्र पहचान, त्वरित प्रतिक्रिया और साक्ष्य-आधारित योजना को सक्षम बनाती है।

रेबीज़ और इसके जोखिम

- रेबीज़ एक वायरल संक्रमण है जो संक्रमित जानवरों जैसे कुत्ते, बिल्ली, चमगादड़ और बंदरों की लार से फैलता है।
- यह सामान्यतः काटने, खरोंच या खुले घावों में लार के प्रवेश से फैलता है।
- लक्षणों में बुखार, सिरदर्द और मतली शामिल हो सकते हैं; भ्रम एवं जल का भय (हाइड्रोफोबिया) भी हो सकता है।

- संभावित संपर्क के तुरंत बाद दी गई पोस्ट-एक्सपोजर वैक्सीन संक्रमण को रोकने का सबसे विश्वसनीय तरीका है।
- भारत के राष्ट्रीय रेबीज नियंत्रण कार्यक्रम के अनुसार, 2012 से 2022 के बीच 6,644 संदिग्ध मानव रेबीज मामले और मौतें दर्ज की गईं।
 - हालाँकि, WHO का अनुमान कहीं अधिक है— लगभग 18,000–20,000 मृत्युएँ प्रतिवर्ष, जिनमें से दो-तिहाई पीड़ितों की आयु 15 वर्ष से कम होती है। भारत अकेले वैश्विक रेबीज मृत्युओं का 36% हिस्सा है।
- रेबीज की समस्या विशेष रूप से गंभीर है क्योंकि लक्षण प्रकट होने के बाद यह लगभग 100% घातक होता है।

स्रोत: बिज़नेस स्टैंडर्ड (BS)

कैंसर उपचार में नैनोबॉट्स

समाचार में

- भारतीय विज्ञान संस्थान (IISc) बेंगलुरु के प्रोफेसर डॉ. अम्बरीश घोष ने चुंबकीय नैनोरोबोट विकसित किए हैं, जो दवाओं को गहराई तक ट्यूमर में पहुँचा सकते हैं। यह लक्षित, न्यूनतम आक्रामक कैंसर उपचार को संभव बनाता है, जिसमें कम दुष्प्रभाव और तीव्र रिकवरी होती है।

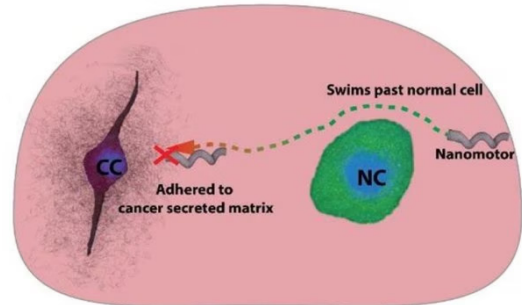
नैनोबॉट्स

- ये छोटे रोबोट होते हैं जिन्हें विशेष कार्यों के लिए डिज़ाइन किया जाता है, जैसे लक्षित दवा वितरण।
- ये दवाओं को सटीक रोग-प्रभावित क्षेत्रों तक पहुँचने देते हैं, जिससे उपचार अधिक प्रभावी होता है और पारंपरिक तरीकों की तुलना में दुष्प्रभाव कम होते हैं।

दवा वितरण में अनुप्रयोग

- चुंबकीय नैनोरोबोट बैक्टीरिया की गति की नकल करते हैं, जिनमें हेलिक्स-आकार की पूंछ और चुंबक होता है, जिससे वे ऊतकों के बीच तैर सकते हैं तथा दवाओं को सटीक रूप से कैंसर कोशिकाओं तक पहुँचा सकते हैं, बिना स्वस्थ ऊतक को हानि पहुँचाए।
- ये स्थानीयकृत गर्मी उत्पन्न कर ट्यूमर को नष्ट कर सकते हैं, स्वयं दवा के रूप में कार्य कर सकते हैं और MRI बीकन के रूप में भी कार्य कर सकते हैं।

- ये डिम्बग्रंथि (ओवरी) और स्तन कैंसर तथा कुछ बैक्टीरिया के विरुद्ध प्रभावी हैं। साथ ही, ये दंत चिकित्सा में भी संभावनाएँ दिखाते हैं, जैसे रूट कैनाल एवं दाँतों का पुनः खनिजीकरण।



स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस (IE)

भारत बना विश्व का सबसे बड़ा चावल उत्पादक

समाचार में

- भारत चीन को पीछे छोड़ते हुए विश्व का सबसे बड़ा चावल उत्पादक बन गया है।
- भारत का चावल उत्पादन 150.18 मिलियन टन तक पहुँच गया है, जबकि चीन का उत्पादन 145.28 मिलियन टन है।

चावल

- यह भारत की सबसे महत्वपूर्ण खाद्य फसल है।
- यह मुख्यतः खरीफ या ग्रीष्मकालीन फसल है।
- **भौगोलिक परिस्थितियाँ**
 - **तापमान:** चावल को उष्ण और आर्द्र परिस्थितियों की आवश्यकता होती है। औसत मासिक तापमान लगभग 24°C और सामान्य तापमान 22°C से 32°C होना चाहिए।
 - **वर्षा:** 150-300 सेमी वर्षा चावल की वृद्धि के लिए उपयुक्त है। पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश जैसे क्षेत्रों में जहाँ वर्षा 100 सेमी से कम होती है, वहाँ सिंचाई की सहायता से चावल की खेती की जाती है।
 - **मृदा :** चावल विभिन्न मृदा की परिस्थितियों में उगाया जा सकता है, लेकिन गहरी चिकनी और दोमट मृदा आदर्श होती है।

महत्व

- यह भारत की अधिकांश जनता की मुख्य खाद्य फसल है।
- यह राष्ट्रीय खाद्य और आजीविका सुरक्षा प्रणाली में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- यह अन्य देशों को निर्यात कर विदेशी मुद्रा अर्जित करने में सहायता करता है।

वर्तमान स्थिति

- ICAR ने भारत की प्रथम जीनोम-संपादित चावल किस्में विकसित की हैं – DRR Rice 100 (कमला) और Pusa DST Rice 11
- इन किस्मों में उच्च उत्पादन, जलवायु अनुकूलता और जल संरक्षण के संदर्भ में क्रांतिकारी बदलाव लाने की क्षमता है।

स्रोत: ऑल इंडिया रेडियो (AIR)

बैटरी पैक आधार नंबर (BPAN)

समाचार में

- केंद्र सरकार ने बैटरी पैक आधार नंबर (BPAN) प्रणाली का प्रस्ताव रखा है, ताकि बैटरी पैक, विशेषकर इलेक्ट्रिक वाहन (EV) बैटरियों के लिए एकीकृत डिजिटल पहचान बनाई जा सके और उनके पूरे जीवनचक्र में ट्रेसबिलिटी सुनिश्चित की जा सके।

BPAN क्या है?

- बैटरी पैक आधार नंबर (BPAN) प्रत्येक बैटरी पैक के लिए प्रस्तावित 21-अक्षरों का एक अद्वितीय पहचान नंबर है, जिसे भारतीय बाजार में प्रस्तुत किया जाएगा।
- यह बैटरियों के लिए डिजिटल आधार की तरह काम करता है, जिससे अधिकारी बैटरियों को निर्माण से लेकर पुनर्चक्रण या निपटान तक ट्रैक कर सकते हैं।
- इसका मुख्य फोकस EV बैटरियों पर है, जो भारत की लिथियम-आयन बैटरी मांग का बड़ा हिस्सा हैं।
- यह बैटरियों के कुशल पुनर्चक्रण, द्वितीय-जीवन उपयोग और सुरक्षित निपटान को बढ़ावा देगा।

BPAN की प्रमुख विशेषताएँ

- **अनिवार्य अद्वितीय आईडी:** प्रत्येक बैटरी निर्माता या आयातक को बेची गई या आंतरिक रूप से उपयोग की गई बैटरियों को BPAN देना होगा।
- **जीवनचक्र डेटा कैप्चर:** इसमें कच्चे माल की सोर्सिंग, निर्माण, उपयोग, प्रदर्शन, पुनः उपयोग, पुनर्चक्रण और अंतिम निपटान शामिल है।
- **गतिशील अद्यतन:** बैटरी में किसी भी बड़े संरचनात्मक या स्वामित्व परिवर्तन पर नया BPAN जारी करना आवश्यक होगा।
- **दृश्यमान और सतत अंकन:** BPAN को बैटरी पैक पर ऐसे स्थान पर अंकित करना होगा, जिसे आसानी से नष्ट या क्षतिग्रस्त न किया जा सके।

स्रोत: द हिंदू (TH)

